शोध-सार

पेरियार ललई के नाटकों में सामाजिक चेतना का उभार विषय पर कार्य करने के पश्चात हमें ऐसा लगता है कि हिंदी नाट्य-जगत के एक ऐसे क्रांतिकारी व्यक्तित्व को हमारा समाज भूल चुका है, जिसने समाज के सर्वहारा-वर्ग की बेहतरी के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। बहुजनों के योद्धा, क्रांतिकारी लेखक, प्रकाशक और ब्राह्मणवाद के विरुद्ध विद्रोही-चेतना के प्रखर नायक पेरियार ललई मानवतावादी, धर्मनिरपेक्ष और समतावादी व्यक्तित्व थे। अल्पसंख्यकों, शोषितों, दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों के परम हितैषी। वे वेदों के हवाले से बनी वर्ण-व्यवस्था में जन्मे, जातीय भेदभाव, छुआछूत देखा-सहा और समय-समय पर उसका विरोध करते रहे। आगे चल कर उन्होंने हिंदू-धर्म को त्याग दिया और बौद्ध-धर्म की शरण में चले गए। डॉ. भीमराव अम्बेडकर और पेरियार ई. वी. रामास्वामी के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक आंदोलनों का प्रभाव उन पर व्यापक रूप से पड़ा। भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियों का मूल हिंदू धर्म-शास्त्रों, कर्मकांडों, अंधविश्वासों तथा धर्मांधता को समझते हुए उन्होंने समाज के उत्थान में कार्य किया। इसके लिए उन्होंने साहित्य का सहारा लिया और अपने क्रांतिकारी विचारों को हिंदू-धर्म में प्रचलित मिथकीय पात्रों के माध्यम से सरल भाषा में आम जनता तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। उनकी क्रांतिकारी कलम से निकले सभी नाटक व एकांकी जन-साधारण की चेतना को जगाने के उद्देश्य से ही लिखे गए। उनके नाटक सत्तर के दशक के भारतीय समाज में व्याप्त जातीयता, सांस्कृतिक-संघर्ष, धर्माडंबर, अशिक्षा, अगड़ी-पिछड़ी जाति का द्वंद्व आदि को ध्यान में रखते हुए आर्यों द्वारा अपने स्वार्थ हेतु बनाई गई सामाजिक-व्यवस्था, अपने हित-साधन के लिए उनके द्वारा रचाए गए षड्यंत्रों का पर्दाफाश करते हैं तथा साथ ही साथ पाठक व दर्शक को वैज्ञानिक चेतना से ओत-प्रोत करते हैं।

ललई अपने सभी नाटकों में अलग-अलग ढ़ंग से मानववाद विरोधी इस सामाजिक-व्यवस्था के विरुद्ध बिगुल फूंकते हैं और इससे मुक्ति दिलाने की बात करते हैं। वे नाटक में ब्राह्मणी चातुर्वर्णी समाज-व्यवस्था की बखिया उधेड़ते हैं। ब्राह्मणवादी-व्यवस्था समाज को ऊंची-नीची जातियों में तोड़ती है और

यह जातियां छुआछूत को जन्म देती है। ललई अपने नाटकों के माध्यम से बहुजन समाज को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि हिंदू-धर्म एवं अन्य धर्मों में स्वर्ग-नरक की जो मन-गढ़ंत काल्पनिक व्यवस्था है। वह जन-साधारण को लालच और भय दिखा कर ठगने के लिए बनाई गई है। ललई इस व्यवस्था को सिरे से ख़ारिज करते हैं। हिंदू-धर्म का वास्तव में भय पर चलने वाला धर्म है। वह इसलिए क्योंकि इसके सभी धार्मिक क्रियाकलाप, अनुष्ठान आदि ईश्वर के क्रोध से बचने और उसकी कृपा प्राप्त करने से जुड़े हुए हैं। ललई का मानना है कि ईश्वर की कोई सत्ता नहीं होती। ललई हिंदू-धर्म को उधार धर्म कहते हुए हिंदू-धर्म की सभी धार्मिक मान्यताओं का खंडन करते हैं और नकद धर्म के रूप में बौद्ध-धर्म का नाम लेते हैं। नाटककार चाहता है कि बहुजन समाज इस प्रकार के स्वार्थ-सिद्धि के लिए गढ़े गए उपदेशों से सतर्क रहें और पंडे-पुरोहितों के षड्यंत्र में न फंसे।

ललई नाट्य-रचना उन लोगों के लिए करते हैं, जो अशिक्षित हैं अथवा कम पढ़े-लिखे परिवेश से संबंध रखते हैं। इसलिए ललई के नाटकों की भाषा-शैली कथावस्तु एवं अभिनय के अनुरूप सरल एवं सहज है। जिसे एक अनपढ़ मजदूर आसानी से समझ सकता है और एक सुशिक्षित उच्च-अधिकारी भी ग्रहण कर सकता है। उन्होंने नाटक की भाषा का स्वरूप जन-सामान्य द्वारा प्रयोग की जाने वाली खड़ी बोली हिंदी को रखा। जिसमें मुहावरे, लोकोक्ति, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द आदि का अच्छा मिश्रण है। इन सभी विशेषताओं के कारण ललई के नाटक बहुजन समाज में प्रसिद्ध हो सके। इन विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ कमियां भी ललई के नाटकों में देखी जा सकती है। उनके नाटकों में आधुनिकता की कमी है अर्थात् उनके नाटकों में प्रकाश-व्यवस्था से संबंधित संकेत नहीं दिए गए हैं। कुछ एक अपवादों को छोड़ कर पात्रों के वस्त्र-विन्यास आदि पर कोई ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। नाटकों में प्रतीकात्मकता का आभाव है। जो कुछ कहा गया है वह एकदम साफ, सीधे, स्पष्ट और सरल रूप में कहा गया है। लेकिन इन कमियों को नजरअंदाज किया जाना चाहिए क्योंकि ललई ने अपना नाट्य-कर्म मनोरंजन हेतु नहीं अपितु जन-जागृति हेतु किया था।

पहला अध्याय चार उप-अध्याय में विभाजित है, जिसमें **पेरियार ललई का व्यक्तित्व, राजनैतिक बोध, मिथक-बोध तथा रचना-प्रक्रिया और तद्युगीन-समाज** का उल्लेख किया गया है। जिसके अंतर्गत पेरियार ललई के जीवन और उनके क्रांतिकारी कार्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में ललई के नाटकों की सामाजिकता को परखते हुए **उनके नाटकों में जातीयता का भाव, सांस्कृतिक वर्चस्व का द्वंद्व, मिथकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन एवं सामाजिक पक्षधरता** को उद्घाटित किया गया है।

तीसरे अध्याय में ललई की रंग-दृष्टि के माध्यम से उनके **नाटकों की कथावस्तु, संवाद-योजना एवं भाषा-शैली** को प्रस्तुत किया गया है।

चौथे अध्याय में ललई के नाटकों का मूल्यांकन करते हुए **जातीय एवं ब्राह्मणवादी-व्यवस्था का खंडन, पौराणिक मिथकों की तर्क-संगत व्याख्या एवं शोषण के विरुद्ध-स्वर** को जांचा-परखा गया है।

ललई इस अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के विरुद्ध आवाज उठते हैं और सदियों से चली आ रही मानव-विरोधी वर्ण-व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए जन-साधारण को जागरुक करते नजर आते हैं। वे इस शोषण-आधारित व्यवस्था को आड़े हाथों लेते हैं और उसकी पोल खोलते हैं। उनका मानना है कि ये धर्म-शास्त्र कुछ चालाक, स्वार्थी मनुष्य ने केवल वर्ग विशेष के लाभार्थ रचे हैं। इसलिए उनके निर्देश युगों तक सर्वमान्य नहीं समझे जाने चाहिए। ललई ब्राह्मणवादी-व्यवस्था के आधार धर्मग्रंथों को ललकारते हुए बेख़ौफ़ उन्हें 'अधर्म-शास्त्र' की संज्ञा देते हैं। शोषणकारी ब्राह्मणी-व्यवस्था में सुधार नहीं किया जा सकता बल्कि इससे अलगाव ही उचित है। अपनी इस क्रांतिकारी विचारधारा के कारण ही पेरियार ललई ने बौद्ध-धर्म की शरण ली।